संस्थापित १८६७ ई.

ओ३म्

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

आजीवन शुल्क ₹ १०००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) एक प्रति ₹ २.००

● वर्ष : १२० ● अंक : ३१ ● ०४ अगस्त, २०१५ श्रावण कृष्ण पंचमी सम्वत् २०७२ ● दयानन्दाब्द १६१ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११६

भ्रष्टाचार मुक्त भारत बनाने के लिए आर्य समाज आन्दोलन को तीव्र गति से चलाना अनिवार्य बताते हुए अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश के स्वाध्याय को अनिवार्य बताया-

-देवेन्द्रपाल वर्मा

आर्य समाज नामनेर आगरा का वार्षिक अधिवेशन दिनांक २६.७.१५ को सम्पन्न हुआ। अधिवेशन के समापन सत्र में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारे। उन्होंने अधिवेशन को सम्बोधित करते हुए कहा कि महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना करके उसे आन्दोलन नाम दिया। सत्यार्थ प्रकाश ग्रंथ लिखकर सत्यासत्य का विवेचन करने का मार्ग दिखलाया। हमारा देश लगभग १ हजार वर्ष से पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ा था। मातृशक्ति दीन हीन दशा में जीवन जी रही थी और अछूतों से पढ़ने का अधिकार छीन लिया गया था। ढोंग पाखण्ड भ्रष्टाचार, छुआछूत व जाति पांति का भेद देश को विनष्ट कर रहा था। वेद के स्थान पर पुराण धर्मग्रंथ बना दिए गये थे। ढोंग पाखण्ड फैलाने वाले तथाकथित धर्मगुरू जो कुछ भी होता है वह भगवान ही करता है हम स्वयं कुछ भी नहीं करते कहकर हमें धर्मभीरू बना रहे थे। वे कहते थे कि हमारे सारे किये गये पापों को मंदिरों में चढावा चढ़ाने और मत्था झुकाकर माफी मांगने से वे सारे पाप नष्ट हो जाते हैं, कोई कहते थे कि गंगा मैया में स्नान करने से और ब्राह्मणों को दान देने से सारे पाप धुल जाते हैं।

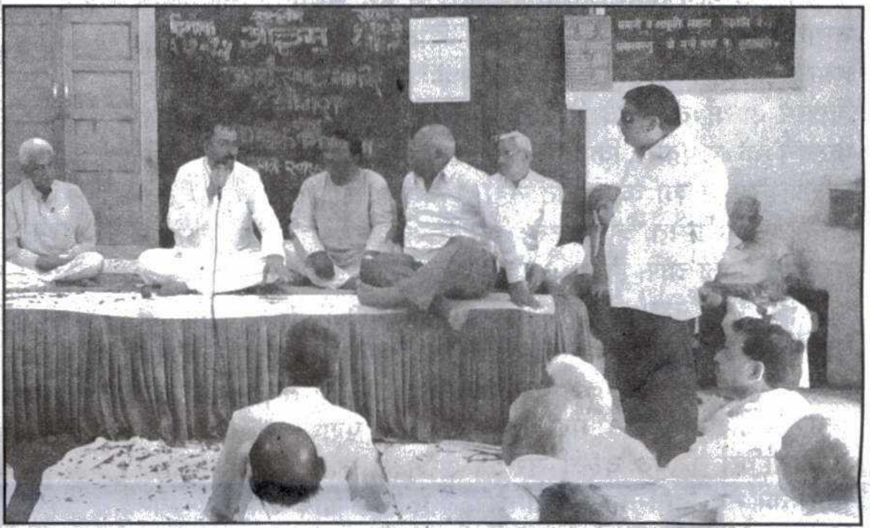

फलतः हम अकर्मण्य निष्क्रिय बनकर विदेशियों के रहम पर जीने को विवश थे। महर्षि दयानन्द ने आकर देश की सारी दुर्दशा पर विहंगम दृष्टि डाली और उन सभी दोषों से रहित भारत बनाने का दृढ़ निश्चय किया। मातृशक्ति को उसके पद पर अधिष्ठित कराने के लिए उसे सुशिक्षित बनाने का नारा दिया। जन जन में शिक्षा प्रसार का संदेश दिया। वेद को विदेशियों ने गड़रियों के गीत कहकर तिरस्कृत किया था। ऋषि ने वेद को सम्पूर्ण सत्य विद्या ज्ञान विज्ञान का केन्द्र बताया। यह भी घोषणा की कि वेद ज्ञान परमात्मा की अमृत वाणी है इसको आदि सृष्टि में परमात्मा ने सम्पूर्ण जीवात्माओं के कल्याण के लिए मोक्ष से लौटे सर्वोत्तम ऋषियों के माध्यम से हमें प्रदान किया। उन्होंने कहा वेदोनुकूल जीवन जीने वाला व्यक्ति ही सर्वकल्याणकारी कार्य करने में समर्थ होगा। अतः वेद ज्ञान के प्रचार प्रसार व सभी बुराइयों से मुक्त देश बनाने के लिए आर्य समाज आन्दोलन को तीव्र गति से चलायें। उन्होंने विदेशी शिक्षा व्यवस्था को बदलने के लिए छात्र छात्राओं के लिए गुरूकुल स्थापित करने का आह्वान किया। अनेक गुरुकुल खुले जहां से सुसंस्कृत स्नातकों का निर्माण होने लगा। आर्य समाज आन्दोलन तेजी से चला।

स्वराज्य आन्दोलन में आर्य समाज के सर्वाधिक नर-नारियों ने भाग लेकर देश को स्वतंत्र कराया। अपना संविधान बना जिसमें महर्षि के

शेष पेज ६ पर देखें....

वेदामृतम्

श्रेष्ठं यविष्ठमतिथिं स्वाहुत जुष्टं जनाय दाशुषे।
देवाँ अच्छा यातवे जातवेदसम् अग्निमीले व्युष्टिषु।।

देवान् अच्छ देवजनों या दिव्यगुणों की ओर यातवे जाने के लिए मैं व्युष्टिषु उषःकालों में श्रेष्ठं श्रेष्ठ यविष्ठं अतिशय युवा अतिथि अतिथि रूप सु-आहुतं शुभ आहुति के पात्र दाशुषे जनाय आत्म-दान करने वाले जन के लिए जुष्टं प्रिय जातवेदसम् अग्नि सर्वज्ञ एवं सर्वव्यापक अग्नि परमेश्वर की ईडे स्तुति करता हूँ।

अग्नि नाम वाला वह परमेश्वर सर्वश्रेष्ठ है, प्रशस्यों में प्रशस्यतम हैं। जगत् में जो सूर्य, चन्द्र, जल वायु प्रभृति उत्कृष्ट पदार्थ पाये जाते हैं तथा जो बड़े-बड़े प्रतिष्ठित प्रशस्त जन विद्यमान है उन सब जड़ चेतन में वह प्रकृष्टतम है। वह यविष्ठ है सबसे अधिक युवा है। उसकी शक्ति के सम्मुख बड़े से बड़े युवक नरपुंगव हार मानते हैं।साथ ही वह नित्य तरूण है, सामान्य जनों की भांति कभी बूढ़ा नहीं होता। वह मानव के हृदय में अतिथि बनकर आया हुआ है, अतः अतिथि के समान मार्गदर्शन करने वाला है तथा अतिथि के समान अर्चनीय भी है। वह अग्नि देव सु-आहुत है, हमारी शुभ आहुति का पात्र है, हमारे शुद्ध आत्म समर्पण को ग्रहण करने वाला है। वह आत्म समर्पण कर्ता का जुष्ट है, प्रिय है, उससे प्रेमपूर्वक सेवनीय है। वह जातवेदाः है, समस्त उत्पन्न पदार्थो का ज्ञाता और समस्त उत्पन्न पदार्थो में व्यापक है।

हे मेरे सर्वज्ञ एवं सर्वव्यापक जातवेदा प्रभु! अपने समान तुम मुझे भी श्रेष्ठ बनाओ, मुझे भी सदा युवा एवं कर्मण्य बनाओ। मुझ आत्म-समर्पक के तुम प्रिय बनो। मुझे सच्चे अर्थो में तुम देव बना दो, दिव्य गुणों का धारक बना दो। दिव्य गुणों की तीर्थयात्रा के लिए ही मैं तुम्हारी वन्दना कर रहा हूँ।

-डा.रामनाथ वेदालंकार

पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के निधन से राष्ट्र की अपूरणीय क्षति

पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम को शिलांग में एक सभा को सम्बोधित करते हुए हृदयाघात हो गया और वे दिवंगत हो गये। निधन के दुखद समाचार से सारे देश में शोक की लहर दौड़ गयी। उनका शव शिलांग से दिल्ली लाया गया। जहां एयरपोर्ट पर प्रधानमंत्री मोदी जी ने श्रद्धा सुमन भेंट किये।

इस समाचार को प्राप्त करते ही आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ के सभागार में दिनांक २८.०७.२०१५ को प्रातः ११ बजे सभा प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा की अध्यक्षता में एक शोक सभा आयोजित हुयी। जिसमें सभा प्रधान श्री देवेन्द्रपाल वर्मा, मंत्री-स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, कोषाध्यक्ष-डा. धीरज सिंह, उप प्रधान-श्री अरविन्द कुमार, आचार्य वेदव्रत अवस्थी, श्री अजय श्रीवास्तव, डा. भानु प्रकाश आर्य, श्री अखिलेश शर्मा, एडवोकेट, श्री शिव कुमार कौशल, श्री सियाराम वर्मा, श्री भुवन चन्द्र पाठक, श्री कृष्ण मुरारी यादव, श्री आशुतोष सिंह चौहान, हरीश कुमार शास्त्री, शत्रोहन शर्मा, गोविन्दराम, रिसाल आदि ने राष्ट्र निर्माण में उनके समर्पण भाव की सराहना करते हुए उनके अधूरे स्वप्न को पूर्ण करने में उन्हीं के अनुसार समर्पण भाव से लगने का संकल्प लिया।

सभा में दो मिनट का मौन रखकर उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

-सियाराम वर्मा,
कार्यालय अधीक्षक

देवेन्द्रपाल वर्मा
प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

आचार्य वेदव्रत अवस्थी
सम्पादक

सम्पादकीय.....

शिक्षा औषध है मानव जीवन निर्माण की

विद्यया विन्दते वसु विद्या से धन ऐश्वर्य मान सम्मान प्राप्त होता है विद्यायाअमृत मश्उते विद्या से अमृतत्व मोक्ष प्राप्त होता है विद्याददाति विनयम् विद्या से विनम्रता आती है आदि अनेक श्रुति व नीति वाक्य ग्रंथों में भरे पड़े हैं। शिक्षा और विद्या पर्यायवाची शब्द है। परंतु आज के ऊँची से ऊँची डिग्री पाने वाले अधिकांश युवाओं में इसके विपरीत आचरण दिखाई पड़ते हैं। सत्ता की कुर्सियों पर बैठे हुए अधिकारी और राजनेता इस पर अवश्य ही मनन व चिन्तन करते होंगे और उपाय भी निकालते होंगे परंतु अवस्था तो दिन प्रतिदिन बिगड़ती ही जा रही है।

वास्तव में महाभारत काल के बाद से हमारे देश में चारित्रिक ह्रास जड़ जमाने लगा। हमारा देश धन सम्पदा से परिपूर्ण समृद्ध देश था पहले यवनों ने आक्रमण करके हमारा धन ऐश्वर्य लूटा अपने खजाने भरे दरिद्रबनाकर पराधीन बनाया फिर धूर्त अंग्रेज व्यापारी बन हमारे देश में आये और हमें पराधीन बनाया। उन्होंने अपनी कुचाली वृत्ति से हमें सदैव अपना गुलाम बनाये रखने के लिए हमारी सारी शिक्षा व्यवस्था बदल डाली, हमारा प्राचीन इतिहास नष्ट करके गलत इतिहास लिखाया जिसमें आर्यो को विदेशी आदिवासियों को देशी कहकर झगड़े फैलाने के उपक्रम किये। शिक्षा व्यवस्था ऐसी चलाई जिसमें चरित्र निर्माण का कोई पाठ नहीं, केवल रोजी रोटी कमाने तक ज्ञान देना सीमित था फलतः हम निरीह मानव बनकर उनकी पराधीनता का त्रास झेल रहे थे।

हमारे देश के परम सौभाग्य से उस विकराल काल में महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का प्रादुर्भाव हुआ उन्होंने कार्यक्षेत्र में उतर कर देश दुरवस्था पर गहन चिन्तन किया और हमारे विनाश के मूल में पराधीनता को माना पराधीनता के मूल में नारी शक्ति के पद दलन उसकी अशिक्षा, ढोंग पाखण्ड जाति पांति का भेद विभिन्न मत मतान्तरों का उदय और उनके परस्पर विरोध को पाया और सभी बुराइयों से रहित सुख समृद्ध भारत बनाने के लिए सत्यसनातन वैदिक धर्म की संस्थापना का उद्घोष करके आर्य समाज की स्थापना की यह स्पष्ट कहा कि आर्य समाज कोई नया मत या सम्प्रदाय नहीं, आन्दोलन है ब्रह्मा से जैमिनि ऋषि पर्यन्त प्रतिष्ठापित सत्य सनातन वैदिक धर्म ही हमारा धर्म है उसमें तथाकथित धर्म गुरूओं द्वारा समय समय पर निज स्वार्थ पूर्ति के लिए फैलाये दोषों को दूर करने के लिए यह आन्दोलन है। उन्होंने विदेशी शिक्षा व्यवस्था को हटाकर वैदिक शिक्षा व्यवस्था प्रसारण के लिए छात्र-छात्राओं के लिए गुरूकुल खोले जाने का संदेश दिया, जिसमें अनुशासन बद्ध ब्रह्मचर्य साधना के साथ सभी विषयों में पारंगत विद्वान बने अनेक गुरूकुल आर्य विद्यालय खुले।

स्वराज्य आन्दोलन चला जिसमें गुरूकुलों में अधीत छात्र-छात्राओं और आर्य सदस्यों ने भाग लेकर देश को स्वतंत्र कराया आजादी के बाद सत्ता जिन नेताओं के हाथ में आयी उन्होंने देश की भौतिक समृद्धि पर अपना पूरा ध्यान केन्द्रित कर लिया। शिक्षा व्यवस्था को बदलने या सुधारने पर अपना ध्यान नहीं लगाया। वही विदेशी शिक्षा को चालू रखा फलतः युवक और युवती ऊँची से ऊँची डिग्री धारी तो बनने लगे परन्तु चरित्र निर्माण शून्य हो गया। विद्या प्राप्ति का अर्थ केवल अधिकाधिक धनार्जन बनवाया। फलतः आज की युवा पीढ़ी सुयोग्य नहीं तैयार हो रही। उनमें भ्रष्टाचार और सभी प्रकार की चरित्र हीनता बढ़ने लगी। आज नारी उत्पीड़न चरम पर है उसका शील सुरक्षित नहीं है। धनार्जन ही मुख्य उद्देश्य बन रहा है उसके लिए सही गलत का ध्यान स्वप्न हो रहा है तथा कथित धर्मगुरू किसी भी पाप का प्रायश्चित भगवान के मन्दिर में चढ़ावा चढ़ाने का प्रचार करने में लगे हैं जब भगवान के मन्दिर में धन चढ़ाने से हमारे सारे पास क्षमा हो जाते हैं ऐसा हमारे मनों में भरा जा रहा है तो फिर अपराध क्यों न बढ़ेंगे?

आर्य समाज ने आजादी के बाद आर्य समाज आन्दोलन की सम्भवतः आवश्यकता नहीं समझी इसी लिए सारे विकार बढ़ते जा रहे हैं और हम सभी अंग्रेजी व अंग्रेजों की व्यवस्था के गुलाम बनते जा रहे हैं देश को वर्तमान दुर्दशा से उबारने के लिए आज आर्य समाज आन्दोलन को और तीव्र गति से चलाने की आवश्यकता है। हम सभी आर्य नर-नारी इस पर गम्भीर चिन्तन करें-बुराइयों की जड़ में सबसे पहले विदेशी शिक्षा पद्धति है फिर तथाकथित धर्म गुरूओं द्वारा फैलाये जाते ढोंग और जाति पांति का बढ़ता भेद है। जातियो के भेद का प्रयोग राजनीतिक दल अपनी सत्ता पाने या बचाने के लिए कर रहे हैं। अतः हम सभी आर्य नर-नारी एकजुट होकर विदेशी शिक्षा पद्धति बदलने के लिए सरकार पर दबाव बनायें, ढोंग पाखण्ड मिटाने के लिए जातिवाद समाप्त करने केलिए जन जन में वैदिक संदेश पहुंचाने का संकल्प लें। जब तक यह विदेशी शिक्षा पद्धति नहीं बदल रही तब तक अपने घरो में अपने बच्चों को चरित्र निर्माण की शिक्षा अपनी वाणी व अपने चरित्र से दें तथा आर्य समाज के द्वारा संस्थापित व संचालित विद्यालयों में नैतिक शिक्षा के पाठ को अनिवार्य बनायें परीक्षा फल में उनके परिणाम को सर्वाधिक महत्व दें।

निश्चय ही ऐसा करने से हमारी संतानों में वह शिक्षा मानवजीवन निर्माण की परमौषध बनेगी और उससे सुनिर्मित युवापीढ़ी राष्ट्र को उत्तरोत्तर उन्नति पर ले जाते हुये सुसमृद्ध राष्ट्र को बनाने में समर्थ बनेगी।

-सम्पादक

ईश्वर जीवों का मित्र

शं नो मित्रः शं वरूणः शं नो भवत्वर्यमा।
शं न इन्द्रो बृहस्पतिः शं नो विष्णुरूरूकमः।।

-ऋग्वेदः मण्डल-१ सूक्त-६०, मंत्र-६

पदार्थ- ईश्वर (नः) सबका (मित्रः) मित्र, (वरूणः) वरण करने योगय, (अर्यमा) न्यायकारी, (इन्द्रः) परम ऐश्वर्य से युक्त (बृहस्पतिः) वेद एवं वाणी का स्वामी, (विष्णुः) सर्वव्यापक और (उरूक्रमः) पराक्रम स्वरूप है। वह (नः) हम सबके लिए (शम्) सुखकारी (भवतु) होवे।

ईश्वर एक नाम अनेक

संसार की रचना करने वाला, वेद का देने वाला, जीवों के कर्म-फल का दाता,प्रलय करने वाला और सब मनुष्यों का उपास्यदेव परमात्मा एक ही है। किंतु उसके नाम अनेक हैं। उसका निज नाम 'ओ३म' है। शेष उसके गुणवाची नाम हैं। वह सृष्टिकर्ता होने से ब्रह्मा, सर्वव्यापक होने से विष्णु, कल्याणकारी होने से शंकर, न्यायकारी होने से यम, ऐश्वर्ययुक्त होने से इन्द्र, अनन्त पराक्रमयुक्त होने से उरूक्रम, सबसे बड़ा होने से ब्रह्म, दुष्टों को रूलाने से रूद्र, सहायक होने से बंधु, रक्षक होने से पिता, कृपालु होने से माता, विद्या प्राप्त कराने से आचार्य, सत्य-धर्म का उपेदश करने से गुरू,अजन्मा होने से अज, प्रलय के बाद बचे रहने से शेष और भजने योग्य होने से भगवान कहलाता है। ईश्वर के गुण-कर्म असंख्य होने से उसके नाम भी असंख्य हैं।

एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति (ऋग्वेदः मण्डल-१ सूक्त-१६४, मंत्र-४६)
(एक ईश्वर को विद्वान लोग अनेक नामों से पुकारते हैं।)

वह मित्र फिर क्या कमी

ईश्वर सबका मित्र है, सबको प्रेम करता है और सबका सदा भला चाहता है। संसार में जिन व्यक्तियों को मित्र नहीं मिलते, वे उदास देखें जाते हैं। यह उचित नहीं है। संसार के मित्र तो अस्थायी होते हैं। किसी की मित्रता २ वर्ष किसी की ५० वर्ष किसी की जन्म भर चलती है और कोई तो बाद में शत्रु भी बन जाता है। परंतु परमात्मा की मित्रता सभी जन्मों में बनी रहती है।

स नो बंधुर्जनिता स विधाता (यजुर्वेदः अध्ययाय-३२, मंत्र-१०)

(वह परमात्मा भ्राता के समान सुखदायक, सकल जगत् का उत्पादक और सब कामों का पूर्ण करने वाला है।) वह परमात्मा जब हमारा मित्र है तो फिर क्या कमी है? हमें चिंता और भय से मुक्त रहना चाहिए।

दयालु और न्यायकारी

ईश्वर दयालु है। वह सब प्राणियों के लिए अन्न, जल, वायु आदि की व्यवस्था करता है। वह सब प्राणियों का हितैषी है और मनुष्यों, पशु-पक्षियों, कीड़ो-मकोडों, सबको आवश्यक पदार्थ प्रदान करता है। वह न्यायकारी भी है। उसके द्वारा बनाये गये प्रकाश, गर्मी-सर्दी, गुरूत्वाकर्षण, जन्म-मृत्यु आदि के नियम सबके लिए समान हैं और किसी के लिए किसी भी परिस्थिति में नहीं बदलते। वह कर्म फल का दाता है किंतु कर्मो का जो फल दुःख के रूप में देता है वह भी दयापूर्वक देता है। उदाहरण के लिए सुअर के जीवन को देखें। दुष्कर्मो के फल के रूप में उसे नीच योनि मिली है। यह परमात्मा का न्याय है। किंतु सुअर के जीवन में भी अपने प्रकार का सुख-चैन है। ईश्वर उसके दण्ड का भुगतान नरमी से कराता है। यह उसकी दया है।

शारीरिक सुख, मानसिक शांति और आत्मिक आनंद

शम् अर्थात् सुख ३ प्रकार का होता है। सु-अच्छा, ख-इन्द्रिय, इन्द्रियों एवं शरीर को भला लगने वाला अनुभव शारीरिक सुख कहलाता है। जैसे- अच्छा भोजन करना, अच्छा रूप देखना, अच्छा शब्द सुनना आदि। मन के सुख को शान्ति कहते हैं। यदि मन अशान्त हो तो शरीर का सुख भला नहीं लगता। मन की शान्ति के लिए लोग घर-बार और शारीरिक सुख के साधन त्याग देते हैं। आत्मा के सुख को आनन्द कहते हैं। यह सत्य, न्याय, धर्म, सेवा, त्याग, बलिदान एवं उपासना से प्राप्त होता है। मनुष्य को तीनों की आवश्यकता है और ईश्वर तीनों का दाता है।

डॉ. रूपचन्द्र दीपक
मो-९८३६१९८१९६०

धरोहर.....

आर्य जगत् के विद्वान - गुरूकुल परम्परा के गौरव

आचार्य (डॉ.) प्रशस्य मित्र शास्त्री

(संस्कृत के प्रख्यात कवि- व्यंगकार एवं कथा लेखक वैदिक विद्वान्)
(साहित्य अकादमी पुरस्कार एवं राष्ट्रपति सम्मान प्राप्त संस्कृत लेखक)

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा
उ.प्र., लखनऊ।

आजकल पूरे देश में पिछले ४ दशकों से संस्कृत कवि सम्मेलन एवं संस्कृत गोष्ठी अथवा संस्कृत शास्त्रार्थ तथा संस्कृत सम्मेलन कहीं भी हो वहां की शोभा डॉ. प्रशस्य मित्र के बिना अधूरी लगती है। अब तक पढ़ा था- ''भासो हासः कवि कुलगुरू कालिदासो विलासः'' ऐसी विधा के धनी एवं हास्य पुट के साथ व्यंग्यकार उपदेश देकर अपने व्याकरण और साहित्य को गरिमायुक्त करने वाले प्रशस्य मित्र जी प्रशंसा और सम्मान के पात्र हैं आपका जन्म श्री कृष्ण जन्माष्टमी के पावन पर्व पर ८ सितम्बर १९४७ में स्वतंत्रता प्राप्ति के २४ दिन बाद हुआ। शास्त्री नगर कानपुर निवासी आपके पिता प्रसिद्ध आर्य विचारों के पोषक थे। मूल रूप से बिहार राज्य के सीवान जिले के आपके पूज्य पितामह श्री पं. शिव बालक जी निवासी थे। आप १९०८ में स्वामी श्रद्धानन्द जी से गुरूकुल काँगड़ी में आकर मिले थे और लगभग १० वर्षों तक गुरूकुल में रहकर स्वामी जी का आशीर्वाद प्राप्त किया। इतने समय में उन्हें देशभक्ति और राष्ट्ररक्षा के संस्कार प्राप्त करने का अवसर मिला। आपके पूज्य पिता जी पं. जगन्नाथ प्रसाद शास्त्री आर्य पुरोहित संस्कृत के अच्छे विद्वान बने। आपने स्वतंत्रता संग्राम सेनानी बनकर देश रक्षा का संकल्प लिया। आप प्रसिद्ध समाज सेवी श्री देवीदास जी आर्य के सहयोगी सेनानी रहे तथा ४० वर्षों तक गोविन्द नगर कानपुर में पुरोहित पद पर प्रतिष्ठित रहे। आपका कानपुर स्थायी पता हो गया। उसी कार्यकाल में आपका जन्म भी कानपुर नगरी में हुआ। जैसे सरदार भगत सिंह के दादा जी, चाचा एवं पिता जी आर्य थे और वे उनके गुणों से प्रभावित होकर समाज में सम्मानित हुए उसी प्रकार आपके दादा जी, पिता जी विद्वान तथा समाजसेवी थे, परोपकार प्रिय थे उनका प्रभाव आपके जीवन में गुणात्मक रूप से आया और आपको सोने से कुन्दन बना दिया। प्रतिदिन यज्ञ करने से सतोगुणी बुद्धि मेघा बुद्धि के रूप में प्रकट हो गई और आप बाल्यकाल से ही मेधावी छात्रों में प्रशस्य हो गए ऐसे प्रशस्यों के मित्र अपने नाम को सार्थक करने वाले बने। प्रशस्य मित्र शास्त्री आपको यह नाम गुरूकुल महाविद्यालय अयोध्या में दिया गया। स्वामी त्यागानन्द जी का सान्निध्य आपने १९५६ से १९६१ तक विद्या प्राप्त किया यही संस्कार आपको वाराणसी के मोतीझील में आप प्रसिद्ध वैयाकरण स्वनाम धन्य पं. ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु के चरणों में अन्तेवासी बनकर निरन्तर १० वर्ष तक सांगोपांग वेदों का वैदिक ग्रंथों का सम्यग् ज्ञान प्राप्त कर मोती झील से समुद्र नकर चले जो सोने पर सुगन्धि का कार्य पं. युधिष्ठर जी मीमांसक के दिशा गर्भ में रहकर पूर्ण किया। आपने शास्त्री कक्षा में स्वर्ण पदक प्राप्त किया। आपने एम.ए. परीक्षा में चार स्वर्ण पदक प्राप्त किए तथा सभी परीक्षायें सर्वप्रथम उत्तीर्ण करके पीएच. डी. वेद विषय में प्राप्त की। इस प्रकार जीवन का स्वर्ण पदक उत्तरोत्तर परिष्कृत हुआ और आप कुन्दन बनकर परिवार तथा समाज के सच्चे अलंकार आभूषण बन गए। आपकी योग्यता एवं वरीयता से प्रभावित होकर कानपुर वि.वि. से सम्बद्ध फिरोजगांधी महाविद्यालय के स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग में १९७३ से २०११ तक संस्कृत का अध्यापन कराकर भावी पीढ़ी को तैयार किया। अनेक छात्रों को आपके निर्देशन में रहकर (पीएच.डी.) उपाधि के लिए शोधकार्य में सफल निर्देश प्राप्त हुआ है। आपकी ऊहा एवं योग्यता से सभी आबाल वृद्ध प्रभावित रहे हैं। आपका विनोदी स्वभाव प्रत्येक परिचित को उत्साहित करता है, आपकी कथनी और करनी सदैव सोद्देश्य रहती है। निश्छल स्वभाव, सात्विक प्रेम, मधुर वाणी, अहंकार शून्य, ज्ञान-वैराग्य की प्रबल भावना से देदीप्यमान आपका ओजस्वी तेजस्वी मुखमण्डल- प्राचीन परम्परा पोषित वेष-भूषा कुर्ता-धोती आपकी पहचान है।

आपने अब तक लगभग ११-१२ संस्कृत में पुस्तकें प्रकाशित की है जो संस्कृत साहित्य की अमूल्य धरोहर हैं जिनसे प्रभावित होकर संस्कृत अकादमी- सरकार एवं राष्ट्रपति महोदय ने भी आपको पुरस्कृत किया है। यह हमारे लिए अत्यन्त गर्व और प्रसन्नता की बात है। इससे आर्य जगत् एवं गुरुकुलीय परम्परा भी गौरवान्वित हुई है। आप अपनी मित्र मण्डली को सदैव अपनी नवीन रचनायें सुनाकर ज्ञान पयोधि में स्नान कराते हैं। जैसे- हिन्दी साहित्य में काका हाथरसी प्रसिद्धि को प्राप्त हुए कवि सम्मेलनों में उन्हें सुनने के लिए विशेष उत्कंठा रहती थी। उसी प्रकार संस्कृत सम्मेलनों में आपको सुनने के लिए विशेष उत्साह और उत्कण्ठा रहती है। आपका हास्य रस आपका व्यंगबाण राजनीति-, धर्मनीति- समाजनीति को भी प्रभावित करता है। हिंदी के मुहावरों की तरह संस्कृत की सूक्तियों पर भी आपकी विचित्र शैली-विचित्र ऊहा नए रूप में प्रभावित करती है। जैसे एक दूधिया दूध लेकर आता है तो दूध लेने वाला पूछता है कि आपकी गाय कितना दूध देती है तो वह कहता है कि २ किलो फिर पूछता है तो चार किलो कैसे बेच देते हो? वह कहता है कि सब गंगा मैया की कृपा हैं।

एक मित्र अत्यंत कृपण है कभी कुछ खिलाता पिलाता नहीं। एक दिन सभी मित्रों को दूध की दावत दे रहा है मिठाई और दूध पीते हुए मित्र पूछते हैं कि भाई कोई पर्व अथवा घर में प्रसन्नता का वातावरण नहीं है आप किस उपलक्ष्य में दूध खिला रहे हैं तब वह उत्तर देता है कि आपको अभी तक मालूम नहीं है? आज नाग पंचमी है इसी उपलक्ष्य में आप सभी को दूध पिला रहा हूँ। इस प्रकार एक नई ऊहा से जनमानस को अपने ज्ञान से प्रभावित करते हैं और एक सात्विक मनोरंजन भी हो जाता है। आर्य जगत में ऐसा व्यक्तित्व अभी देखने को नहीं मिला है।

मेरा परिचय आपसे बहुत पुराना है जब आप पीएच. डी. कर रहे थे। आपके प्रति आत्मीयता बढ़ती चली गयी 'छायेव मैत्री खलु सज्जनानाम् आपको इधर क्षेत्र में बुलवाया लोगों के मन में आप सदैव स्थापित हो जाते हैं। आप गुरूकुल पूठ भी आये बच्चों से मिलकर आप प्रसन्न होते हैं और बच्चे आपको देखकर ही प्रसन्न हो जाते हैं। आप वैदुष्य पूर्ण विचारों को भी सरलतम बनाकर लोगों के हृदय में प्रभावित कर देते है।आपकी मित्र मण्डली, आपका परिवार आपके प्रत्येक व्यवहार से सुपरिचित है यदि किसी को परिहास में कुछ कह देवें तो भी वह उसे उनका प्रसाद स्वीकार कर लेता है। क्योंकि वह मात्र प्रहसाद हेतु होता है। आजकल आप सेवामुक्त हो गये हैं अतः बंधन मुक्त होकर जैसे पक्षी आकाश में उड़कर पूरा ब्रह्माण्ड देखना चाहता है वैसे ही इनको भी पूरे ब्रह्माण्ड (आर्य जगत) का भ्रमण करने की इच्छा होनी चाहिए यदि है तो आप एक बार उन्मुक्त होकर निकलें। प्रत्येक आर्य समाज, आर्य संस्था आपका लाभ उठाये एक सप्ताह, एक मास यथा रूचि आपका सदुपयोग संस्थायें करें। आपकी ऊहा से कुछ छात्र आपकी परम्परा के संवाहक बन सकेंगे अथवा किसी संस्था को अपना केन्द्र बिंदु बना लेवें अच्छा रहेगा। आपकी इस विद्या से संस्कृत जगत का भी उपकार होगा और आपके मानस पुत्र भी पूरे देश में तैयार हो जायेंगे। मैं समझता हूँ मेरे इस सुझाव का सभी समर्थन भी करेंगे। आपके विषय में लिखना सूर्य को दीपक दिखाने जैसा है। आपने संस्कृत साहित्य लिखकर भास, दण्डी और पुराने संस्कृत विद्वानों की श्रृंखला में अपना नाम लिखवा लिया है फिर भी आप सदैव आर्य समाज एवं गुरूकुलों के उन्नयन का चिन्तन करते रहते हैं। यदि आप दूसरे सम्प्रदाय में होते तो हमें भी दर्शन करने के लिए पंक्ति में खड़े होकर प्रतीक्षा करनी पड़ती आज हमें सर्व सुलभ हैं। अपनी बात समापन की ओर ले जाने से पूर्व एक संस्मरण सुनाने का लोभ संवरण नहीं कर पा रहा हूँ-

लगभग १०-१५ वर्ष पुरानी चर्चा होगी मैं गुरूकुल कार्य से ही वाराणसी गया हुआ था और आप विश्व विद्यालय में एक संस्कृत काव्य गोष्ठी में आए थे। आर्य समाज मंदिर लल्लापुरा में ठहरे हुए थे। आप जैसे ही आए नमस्ते आदि के पश्चात् कुशलोपरांत भी आप सामान्य नहीं दिख रहे थे मैंने स्वाभाविक रूपेण पूछ लिया कि क्या स्वास्थ्य ठीक नहीं है तो और अधिक उद्विग्न हो गये मेरी चिन्ता और बढ़ गयी मैंने हाथ पकड़कर नब्ज देखने का प्रयत्न किया तो नाड़ी सामान्य थी फिर साग्रह पूछने पर बताया कि मैं अब ईसाई धर्म स्वीकार करने जा रहा हूँ, आर्य समाज में हमारी आवश्यकता नहीं है थोड़ी देर तो मैं समझ नहीं सका प्रकरण कैसे बदल गया, कैसे दुर्घटना हो गयी फिर क्या करोगे बोले फिर मुसलमान बन जाऊँगा किसी मस्जिद का इमाम बनूँगा मैने फिर पूछा फिर क्या करोगे? बोले फिर सभी समाचार पत्रों में सूचना देकर भव्य कार्यक्रम करूँगा और फिर हिन्दू धर्म स्वीकार करूँगा मैने फिर पूछा फिर क्या करोगे? बोले फिर आर्य समाज के उत्सवों में जाया करूँगा होटल में ठहरा करूँगा और मंत्री प्रधान पीछे पीछे फिरते रहा करेंगे। फिर क्या करोगे- बोले फिर कुछ नहीं मौज से वेद प्रचार करूँगा। तब मेरी समझ में आया कि क्रोध क्यों आ रहा था। अभी कुछ मास पहले आर्य समाज लल्लापुरा के सम्मेलन में कोई विद्वान जीवन मित्र जी आये थे अब पता नहीं कहां है? वे ईसाई बने, मुसलमान बने फिर शुद्ध होकर सपरिवार होटल में ठहरे। दक्षिणा अन्य खर्च होटल खर्च सब आर्य समाज ने दिया। इन्हें यह कष्ट हुआ कि हम अष्टाध्यायी कंठस्थ करके व्याकरण वेद पढ़कर वेद प्रचार करते हैं आर्य समाज में ही रहते हैं, सादा खाते है, ये लोग वेद प्रचार कुछ नहीं पैसे का दुरूपयोग हो रहा है। ऐसे समाजसेवी वेद प्रचार के प्रति समर्पित वैदिक विद्वान के प्रति हम नमन करते हुए उनके दीर्घायुष्य की कामना करते हैं आप अपनी विद्या और विधा को आर्य समाज एवं संस्कृत जगत् के उपकारार्थ सतत पुरूषार्थ करते रहें। आर्य जगत आपका सम्मान करता रहेगा।

पुनः आपका अभिनन्दन करता हूँ। ''भूयश्च शरदः शतात्''

गुरूकुल पूठ
गढ़ मुक्तेश्वर-हापुड़
मो. ९८३७४०२१९२

योग की सार्वभौमिकता

प्रताप कुमार 'साधक'

संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा योग के महत्व को स्वीकार करके प्रत्येक वर्ष २१ जून को ''अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस'' मनाने की घोषणा के पश्चात् विश्व के लगभग समस्त देशों में योग के प्रति अभिरूचि जागृत हुई हैं और लोग योग के सम्बन्ध में अधिकाधिक जानने को उत्सुक हैं। गत् २१ जून को प्रथम विश्व योग दिवस पर न केवल भारत अपितु अमेरिका, इंग्लैंड, रूस, चीन, जापान, जर्मनी जैसे बड़े देश एवं बांग्लादेश, अफगानिस्तान आदि मुस्लिम देशों सहित विश्व के लगभग सभी देशों में विशाल स्तर पर यौगिक क्रियाओं का सामूहिक प्रदर्शन किया गया और मीडिया द्वारा उनका प्रचार भी हुआ। यद्यपि पाकिस्तान तथा भारत के कुछ मुस्लिम नेताओं ने भ्रांतिवश इन स्वास्थ्य प्रद शारीरिक क्रियाओं का विरोध भी किया। अतः योग को स्वीकार अथवा अस्वीकार करने के पूर्व उसके बारे में सही जानकारी प्राप्त कर लेना सभी के लिए आवश्यक है।

योग क्या है? योग का शाब्दिक अर्थ तो जोड़ना या मिलाना है। आध्यात्मिक क्षेत्र में आत्मा को परमात्मा से, परम आनन्द का स्रोत है, मिलाने का नाम योग है, जबकि सामान्य व्यक्ति के लिए मन को अपने लक्ष्य पर स्थिर कर देने को योग कहते हैं। मन अत्यंत चंचल पदार्थ है, जिसे रोककर ही किसी एक विषय पर केन्द्रित किया जा सकता है, और तभी उस विषय का ठीक-ठीक ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। तभी किसी कार्य में कुशलता, प्रवीणता लाई जा सकती है। इसीलिए गीता में योग की परिभाषा बतलाई गई है-''योगदर्शन के अनुसार-''योगश्चित्तवृत्ति निरोधः'' अर्थात् मन की तरंगों को रोक देना ही योग है। यह योग की परिभाषा भी है और उपाय भी। तात्पर्य यह कि चित्तवृत्तियों को रोककर ही योग करना संभव है।

भारत में जन्मे बौद्ध, जैन, शैव, वैष्णव, सिख आदि मत-मतान्तर ढाई-तीन सहस्र वर्ष पुराने हैं जबकि विश्व के समस्त सम्प्रदाय-इस्लाम, ईसाई, यहूदी, पारसी आदि अधिक से अधिक चार सहस्र वर्ष के हैं। इनके पूर्व समस्त देशों में कोई भी सम्प्रदाय, मज़हब, मत-पंथ या मार्ग न था। एकमात्र धार्मिक पुस्तक वेद पर आधारित वैदिक धर्म ही सर्वमान्य था। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद के सिद्धान्तों और शिक्षाओं पर ही आधारित अन्य धार्मिक ग्रंथ -छः शास्त्र या दर्शन उपनिषदें, स्मृतियाँ आदि विद्वान ऋषियों द्वारा समय समय पर लिखे गये। इनमें अलग-अलग सर्वाधिक महत्वपूर्ण विषयों पर लिखे छः दर्शन ग्रंथ- सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, वेदान्त और मीमांसा विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इनके रचनाकार क्रमशः कपिल, पतंजलि, गौतम, कणाद, व्यास और जैमिनी नाम के ऋषि थे। ऋषि पतंजलि रचित योगदर्शन का प्रथम अधिकृत भाष्य व्यास ऋषि ने किया था। योगदर्शन योग संबंधी एकमात्र अधिकृत और प्रामाणिक ग्रंथ है, जो मानव मात्र के लिए है इसीलिए उसमें किसी सम्प्रदाय या देश-स्थान का नाम नहीं है। दुखों से अत्यन्त निवृत्ति अथवा आनन्द प्राप्ति का उपाय बतलाना ही योगदर्शन का प्रमुख विषय है। इसके आठ अंग वर्णित हैं- यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि। इसीलिए इसे अष्टांग योग भी कहते हैं। यम के पांच भेद है- अहिंसा, सत्या, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। नियम भी पांच है- शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्राणिधान। यम् और नियम मनुष्य के चारित्रिक उत्थान के लिए हैं जिसे योग रूपी वृक्ष का आधार कहा जा सकता है। समाधि योगवृक्ष का फल है जिसे प्राप्त करने के लिए शेष सातों अंगों को अपनाना आवश्यक है। इसीलिए व्यास ऋषि ने योगदर्शन के भाष्य में लिखा है-''योगः समाधिः'' अर्थात् समाधि प्राप्त करना ही योग है।

किंतु समाधि प्राप्ति के आकांक्षी योग्य साधक हजारों नहीं लाखों में कहीं एक होते हैं। अन्य सभी व्यक्ति शारीरिक स्वास्थ्य तथा अधिक से अधिक मानसिक शांति के लिए योग को अपना रहे हैं। अतएव वर्तमान काल में योग के तीन अंग ही मुख्यतः प्रचलित है- शारीरिक स्वास्थ्य के लिए आसन और प्राणायाम तथा मानसिक शांति के लिए प्रत्याहार, जिसे ध्यान कहा जा रहा है। इसमें यम नियम की चर्चा नहीं होती, यद्यपि योगदर्शन के अनुसार ''जातिदेशकाल समयानविच्छिन्नाः सार्वभौमा महाव्रतम्।'' अर्थात् पांचो यम (अहिंसा, सत्य, अस्तेय-चोरी का त्याग, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह- अनावश्यक वस्तुओं व विचारों का संग्रह न करना) जाति (मनुष्य, पशु, पक्षी आदि) देश (स्थान विशेष) काल (तिथि आदि) अथवा समय (परम्परा) की सीमाओं से न बंधे हुए अर्थात् सर्वत्र, सर्वदा और सर्वथा करने योग्य सार्वभौम (समस्त मनुष्यों के लिए हितकर) श्रेष्ठतम कर्तव्य हैं। वस्तुतः यम नियमों का पालन आध्यात्मिक दृष्टि से ही नहीं वरन शरीर व मन को स्वस्थ रखने के लिए भी महत्वपूर्ण हैं। कुकर्मो में लिप्त व्यक्ति मन से तो अशान्त रहता ही है, शरीर के स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। फिर भी आसन और प्राणायाम करने मात्र से भी शारीरिक लाभ तो होता ही है।

आसन किसे कहते हैं और उनसे क्या लाभ हैं? योगदर्शन के अनुसार ''स्थिरसुखमासनम्'' अर्थात् लम्बे समय तक अविचलित सुखपूर्वक बैठना आसन है। ध्यान और समाधि के लिए निश्चल बैठना पड़ता है। यदि उस समय शारीरिक कष्ट होगा तो मन चंचल बना रहेगा। अतः ऋषियों ने अनेक प्रकार की शारीरिक क्रियाओं के आसन के नाम दिए हैं जिनमें समस्त जोड़ और माँसपेशियां सक्रिय बनी रहती है। शारीरिक स्वास्थ्य के लिए भी ये आसन लाभकारी होते हैं। प्राणायाम के साथ करने पर इन्हें योगासन कहा जाता है।

दण्ड-बैठक आदि कसरतें, कुश्ती, जिमनास्टिक आदि शारीरिक व्यायामों से भी लाभ होता है, किंतु उन्हें छोड़ देने के बाद शारीरिक दोष और पीड़ा का अनुभव होता है, जबकि योगासन करने पर ऐसा नहीं होता। इससे कई प्रकार के रोगों का निवारण भी हो जाता है। रोगों से बचाव भी होता है। अतः आसन दो प्रकार के होते हैं,ऐसा समझना चाहिए- १ ध्यान समाधि के लिए अपनाए जाने वाले आसन और २. शरीर को स्वस्थ और लचीला बनाने वाले आसन। इस दूसरे प्रकार के आसनों का आध्यात्मिक या धार्मिक सम्बन्ध नहीं होता। अतः इन्हीं को विश्व के देशों में अपनाया जा रहा है।

आसन के अनुरूप ही प्राणायाम भी दो प्रकार के होते हैं। योगदर्शन में प्राणायाम की परिभाषा दी गई हैं- ''तस्मिन् सति श्वासप्रश्वासयोर्गतिविच्छेदः प्राणायामः (२-४६) अर्थात् श्वास प्रश्वास की गति को रोकना प्राणायाम कहलाता है। योगदर्शन में प्राणायाम को चार प्रकार से करने का निर्देश है- १. बाह्य वृत्ति (प्रश्वास के बाद बाहर ही रोकना) २. अभ्यंतर (श्वास भरकर भीतर ही यथाशक्ति रोकना) ३. स्तम्भवृत्ति (प्राण को जहां का तहां यथा शक्ति रोक रखना) और ४. वाह्याभ्यन्तर विषयाक्षेपी (श्वास तथा प्रश्वास के समय विपरीत शक्ति लगाकर प्राणों पर नियंत्रण करना)। इन प्राणायामों के अभ्यास से प्राण सूक्ष्म होकर स्थिर सा हो जाता है, और प्राणों के स्थिर होने से मन भी स्थिर हो जाता है, जिससे ध्यान समाधि में सुविधा होती है।

दूसरे प्रकार के प्राणायाम स्वास्थ्य की दृष्टि से किये जाते हैं, जिन्हें सामान्यतः योग के रूप में अपना लिया गया है। इसमें प्राणों को दीर्घ और गतिमान करके फेफड़ों को पूर्ण सक्षम और सक्रिय बनाया जाता है और शरीर में रक्त संचालन को अवरोध रहित करने का प्रयास किया जाता है। फेफड़ों के सहस्रों कोष्ठक जो सामान्य श्वास प्रक्रिया में सक्रिय नहीं हो पाते प्राणायाम के द्वारा सक्रिय हो जाते हैं। इन प्राणायामों में मुख्यतः श्वास-प्रश्वांस की ही क्रियाएं की जाती है। योगासनों को भी प्राणायाम के साथ करने से विशेष लाभ होता है। आधुनिक विज्ञान के ''फिजियोथेरेपिस्ट' भी प्राणायाम सहित आसन ही कराते हैं।

स्वास्थ्य संबंधी उपरोक्त आसन और प्राणायाम सभी देशों तथा सभी आयु के स्त्री पुरुषों के लिए लाभकारी होते हैं, भले ही वे किसी भी धार्मिक समुदाय के हों। इन्हीं स्वास्थ्य प्रद क्रियाओं को योग का नाम दिया गया है। पूर्ण श्वांस भरकर 'ओ३म' का दीर्घ उच्चारण अथवा मुँह बन्द कर नाक से ध्वनि सहित श्वांस निकालना (भ्रामरी प्राणायम) ये दोनों फेफड़ों के लिए अत्यन्त लाभकारी प्राणायाम हैं, धर्म के आधार पर इनका विरोध करना उचित नहीं है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि योग को धीरे धीरे समस्त भूमण्डल के मनुष्य अपनाकर लाभान्वित होंगे। योग के प्रचारकों का मुख्य उद्देश्य भी यही होता है- ''सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।'' अर्थात् सब मनुष्य सुखी और निरोग्य रहें। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की यह भावना न केवल प्रशंसनीय अपितु ग्रहणीय भी है।

मो. ९४५०००१४४१

आचार्य पं. उमाकान्त जी में था पाण्डित्य एवं व्यक्तित्व का अद्भुत संगम

पूज्य पं. उमाकान्त जी उपाध्याय का निधन एक लम्बी बीमारी के पश्चात् दिनांक २ नवम्बर सन् २०१४ तदनुसार वार रविवार को प्रातः ८ बजे हो गया। वे न केवल बंगाल या भारत के ही विख्यात विद्वान व साहित्य साधक थे, बल्कि पूरे विश्व में उनका एक वैदिक विद्वान व साहित्य साधक के रूप में बड़ा सम्मान था। वे एक असाधारण व्यक्तित्व के धनी थे और उनके व्यक्तित्व तथा विद्वता का प्रभाव एक अनजान व्यक्ति पर भी पड़ता था। पण्डित जी केवल कलकत्ता के ही नहीं बल्कि पूरे बंगाल की पहचान बन गये थे। मेरी उनमें बहुत अधिक श्रद्धा थी और वे भी मुझे बहुत प्यार करते थे। जब कभी भी मिलते थे या फोन करते थे तो कहते थे कि मैं आपके लेख अनेक आर्य पत्र-पत्रिकाओं में पढ़ता हूँ तो मुझे बड़ी प्रसन्नता होती है।
आपके लेखों में निरन्तर प्रगति देखकर मेरे मन को बड़ी शान्ति मिलती है। आप ऐसे ही लेख लिखते रहें ताकि आर्य जगत में कलकत्ता का नाम सब के मुख पर आता रहे।

मेरे से उनका प्रेम का परिचय इन्हीं बातों से लगता है कि मेरे चार पुत्र हैं और एक पुत्री है। एक पुत्र चि. दिनेश का पुनर्विवाह मुझे एक खड्गपुर की विधवा लड़की से दुबारा करना पड़ा जिसकी गोद में साढ़े तीन चार वर्ष की एक बच्ची भी है, वह भी अपनी माँ के साथ आ गई थी। इस प्रकार मैंने कुल छः विवाह संस्कार करवाए। प्रसन्नता की बात यह है कि सभी विवाह संस्कार पूज्य आचार्य पं.उमाकान्त जी के कर कमलों द्वारा सुसम्पन्न हुए और संस्कारों की सभी ने प्रशंसा की। खड्गपुर वाले साह जी तो इतने अधिक प्रसन्न हुए कि उन्होंने अपने एक मित्र के लड़के का विवाह संस्कार भी पण्डित जी से करवाया। इससे भी अधिक प्रसन्नता की बात यह है कि विवाह केवल कलकत्ता में ही नहीं, संस्कारों के लिए आचार्य जी को कभी हाटिया, कभी रामगढ़, कभी फारविशगंज भी जाना पड़ा। उन्होंने कभी भी अपनी स्वीकृति देने में देरी नहीं की और पूछने पर सदैव प्रसन्नता ही प्रकट की। यह उनकी महानता थी। बहुत समय पहले की बात है पण्डित जी स्व. लालमन जी आर्य से मिलने हिसार गये थे। वहां से उनके स्व. अमीलाल जी से मिलने बहल जाना था। हिसार से बहल जाते समय मेरा गांव देवराला रास्ते में आता है। उस समय मेरे बहनोई पूज्य फूलचन्द्र जी आर्य गुरीरा वाले भी जीवित थे। पण्डित जी, लालमन जी आर्य व फूलचन्द्र जी आर्य तीनों ही लोग बहल जाते समय २-३ घण्टे के लिए मेरे स्व. पिता गोविन्दराम आर्य जिनको सम्मान के रूप में सभी प्रधान जी के नाम से संबोधित करते थे, उनसे मिलने के लिए देवराला ठहरे। पण्डित जी मेरा घर देखकर तथा पिताजी के सत्कार व सम्मान से इतने अधिक प्रभावित हुए कि वे कई बार जब भी मुझसे मिले तब उस यात्रा की चर्चा करना कभी नहीं भूले।

वैसे तो पण्डित जी कलकत्ता के सभी आर्य समाजों के आचार्य थे, फिर भी आर्य समाज कलकत्ता के विशेष रूप से आचार्य थे। वे आचार्य पद पर रहते हुए पचास वर्षो से भी अधिक समय *तक ''आर्य संसार'' मासिक पत्रिका का* सम्पादन बहुत ही योग्यता के साथ बहुत ही सुन्दर ढंग से किया जिससे इस पत्रिका को आर्य जगत में एक विशेष स्थान प्राप्त है। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि मेरे लेख व कविताएं पण्डित जी बराबर प्रकाशित करते रहते थे। अब भी इस पत्रिका का सम्पादक मण्डल मेरे लेख व कविताओं को बराबर प्रकाशित कर रहा है, इसलिए मैं उनका हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। यह पत्रिका कलकत्ता के सभी परिचित आर्य समाजियों के पास जाती है इसलिए इस पत्रिका में लेख व कविता प्रकाशित होना अपना एक अलग महत्व रखता है। पण्डित जी ने काफी पुस्तकें भी लिखी हैं तथा कई स्मारिकाओं का सम्पादन भी किया है जो आर्य जगत में अपना एक विशेष स्थान रखती है।

उन्होंने आर्य समाज कलकत्ता का और आर्य समाज बड़ा बाजार का इतिहास भी लिखा है जिसको पढ़ने से उनकी विद्वता, परिश्रम, लगन और जानकारी का प्रत्यक्ष दर्शन हो जाता है।

जिस प्रकार.मेरे प्यारे देश भारत की गुलामी की जंजीरों को काटने के लिए सैकड़ों नहीं सहस्त्रों क्रांतिकारियों ने अपना जीवन भेंट चढ़ाया है, जिनमें दो परिवारों का योगदान अत्यधिक है। सन् १८५७ के स्वतंत्रता संग्राम के बाद सन् १८६७ में प्रथम बार एक ही परिवार के तीन चापेकर बंधु जिनके नाम दामोदर दास चापेकर, बालकृष्ण चापेकर व वासुदेव चापेकर था, उन्होंने पूना में अंग्रेजी सरकार के अन्याय के विरुद्ध फाँसी के फंदे को चूमा। दूसरा नाम आता है वीर सावरकर बंधुओं का, जिनके नाम थे, बड़े का नाम गणेशपन्त सावरकर बीच वाले का नाम सुविख्यात विनायक सावरकर तथा छोटे का नाम नारायण सावरकर था, जिन्होंने देश को आजादी दिलाने के लिए अपने पूरे जीवन को काला पानी अण्डमान की जेल की अमानवीय यातनाओं को सहन करते हुए तिल तिल करके बलिदान कर दिया। इन परिवारों ने तो देश को स्वतंत्रता दिलाने के लिए अपना जीवन न्यौछावर कर दिया। उसी प्रकार पं. उमाकान्त जी उपाध्याय का पूरा परिवार जिसमें उनके बड़े भ्राता पूज्य स्व. पं. रमाकान्त जी, छोटा भाई स्व. प. शिवाकान्त जी, चचेरा छोटा भाई स्व. पं. श्रीकान्त जी व भतीजा स्व. पं. वाचस्पति जी आते हैं। इन्होंने भी अपना पूरा जीवन वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार व प्रसार के लिए तथा महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित आर्य समाज की उन्नति व समृद्धि के लिए आहुत कर दिया। आर्य जगत इनका सदैव सम्मान करते हुए ऋणी रहेगा।

पं. उमाकान्त जी उपाध्याय के जाने से आर्य जगत को जो अपूर्णनीय क्षति हुई है उसकी पूर्ति होना असंभव सा प्रतीत होता है। ईश्वर इस क्षति को शीघ्र ही पूर्ति करे जिससे आर्य समाज का कार्य सुचारू रूप से आगे बढ़ता रहे। मैं पण्डित जी के निधन पर अपना गहरा शोक प्रकट करता हूँ और उनकी आत्मा की सद्गति व शान्ति प्राप्ति के लिए तथा उनके परिवार वालों को इस दारुण दुख को सहन करने की शक्ति दे इसके लिए परम् पिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ। साथ ही आचार्य जी की साहित्य साधना व आर्य समाज की सेवा को नमन करता हुए इनके प्रति अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूँ।

खुशहाल चन्द्र आर्य
वास्ते गोविन्द राम आर्य एण्ड संस
१८० महात्मा गांधी रोड, दो तल्ला, कोलकता-७
मो. ९८३०१३५७६४

''पढ़ो सत्यार्थ प्रकाश''

पढ़ो सत्यार्थ प्रकाश, जब भी मिले तुम्हें अवकाश,
यह है मन के मैलों को साफ करने की एक उत्तम साबुन,
रखो इसके ऊपर निश्रम पूर्ण विश्वास....
पढ़ो सत्यार्थ प्रकाश........
अज्ञान, अंधविश्वास, पाखण्ड और भ्रम
दुर्गुणं, दुर्व्यसन, इसके पढ़ने से पड़ जाते है नर्म
है यह संजीवनी बूटी, रखो सदा अपने पास.........
पढ़ो सत्यार्थ प्रकाश........
है यह महर्षि दयानन्द कृत चारों वेदों का सार,
लिखी इसमें जीवन उन्नत बनाने की सभी सामग्री,
और सभी महत्वपूर्ण बातें, जो हैं खास खास....
पढ़ो सत्यार्थ प्रकाश.........
महर्षि ने लिखा इसे, करने मानव मात्र का हित,
पढ़ो और इसके अनुसार चलो, कभी न होगा तुम्हारा अहित,
बन जाओगे तुम इतने महान, जितना महान आकाश......
पढ़ो सत्यार्थ प्रकाश......
जीवन की परीक्षा में यदि होना है तुम्हें पास,
परिवार तुम्हारा सुखी बने, न आवे कभी खट्टास,
तो इसको पढ़ने का, कभी न छोड़ो अभ्यास.....
पढ़ो सत्यार्थ प्रकाश........
इसके पढ़ने से बनेगा तुम्हारा जीवन सुखी और पवित्र,
स्वास्थ्य, सुबुद्धि, यश, सम्पन्नता, बनेंगे तुम्हारे मित्र
कभी न पढ़ने से, कोई क्रिया छूट गई ऐसा हो आभास....
पढ़ो सत्यार्थ प्रकाश.....
यह ग्रंथ अमूल्य है, लिखे इसमें मुक्ति पाने के सभी मार्ग और नाम
यदि धर्म में अर्थ और काम किया तो मिलेगा निश्चित ही मोक्ष धाम,
इसकी शिक्षाओं से बढ़ते ही जाओगे, न होगा तुम्हारा कभी ह्रास....
पढ़ो सत्यार्थ प्रकाश.......
गुरुदत्त, श्रद्धानन्द, बिस्मिल ने पढ़ा था सत्यार्थ प्रकाश
महात्मा नारायण स्वामी ने किया प्रतिबंध हटवाने का सद् प्रयास
जीवन उनका बदल गया, बन गये उसी के दास....
पढ़ो सत्यार्थ प्रकाश....
यह सद्ज्ञान का पुंज है, करता सत्य का ही प्रकाश
इस आलौकिक ग्रंथ को पढ़ने की लगी रहे तुम्हें प्यास
सबको पढ़ने की लगन लगी रहे 'खुशहाल' रखता है यही आस...
पढ़ो सत्यार्थ प्रकाश.....

खुशहाल चन्द्र आर्य
वास्ते गोविन्द राम आर्य एण्ड संस
१८० महात्मा गांधी रोड, दो तल्ला, कोलकता-७
मो. ९८३०१३५७६४

आर्य समाज डालीगंज का शताब्दी समारोह

आर्यसमाज (हसनगंज पार) डालीगंज लखनऊ का शताब्दी समारोह दिनांक १८ से २० सित बर १५ तक छत्रपति शिवाजी सभागार रामाधीन सिंह का जेज, आई.टी. चौराहा बाबूगंज में होगा। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. के प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा जी, मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती एवं डा. प्रशस्यमित्र शास्त्री रायबरेली, डा. प्रियंवदा भारती, भजनोपदेशक डा. कैलाश कर्मठ, श्री सत्य प्रकाश आर्य, सिने वादक पं. सीताराम आदि के व्याख्यान, उपदेश, भजन व संगीत के कार्यक्रम होंगे। समारोह में वैदिक यज्ञ, वेद व विज्ञान सम्मेलन, महिला सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, युवा स्वास्थ्य और योग सम्मेलन आदि होंगे।

सेवक राम आर्य
अधिष्ठाता

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई द्वारा
आर्य जीवन निर्माण शिविर सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई द्वारा स्थानीय आर्य समाज मुलुण्ड कालोनी के प्रांगण में आर्यवीर दल मुम्बई ने विगत २ मई से १० मई २०१५ को आर्यवीर एवं आर्य वीरांगना चरित्र निर्माण शिविर आयोजित किया गया।

शिविर प्रारम्भ श्री भूपेश गुप्ता महामंत्री आर्य समाज मुलुण्ड के करकमलों द्वारा ध्वजारोहण के साथ हुआ। शिविर में घाटकोपर, सायन कुर्ला,, बोरीवली, खार, मलाड, मुलुण्ड डोम्बिवलि, ठाणे, भिवडी, काकड़वाड़ी भाण्डुप आदि विभिन्न स्थानों से लगभग ५० आर्यवीर वीरांगनाओं ने भाग लिया। शिविर प्रातः ५ बजे से रात्रि १० बजे तक चलता था। जिससे शिविरार्थियों का आसन प्राणायाम कुंग-फू कराटे व्यायाम सूर्य नमस्कार तथा विभिन्न दलों को सिखाया गया।

शिविर के ईश्वर जीव प्रकृति पंच महायज्ञ, १६ संस्कार आश्रम व्यवस्था वर्ण व्यवस्था की जानकारी शिविरार्थियों ने वैदिक विद्वानों द्वारा प्राप्त की। इसके अतिरिक्त बौद्धिक कक्षाओं में श्री योगेश शास्त्री, श्री नागेश शास्त्री, दिलीप बेलाणी, नरेन्द्र वेदालंकार ने बालक बालिकाओं के चरित्र निर्माण व्यक्ति विकास तनाव मुक्ति योग व व्यवहारिक जीवन की सफलता स्वस्थता आदि विषयों पर विद्वानों के व्याख्यान प्रस्तुत किये गये उसके पश्चात उपरोक्त विषयों पर बालक बालिकाओं की एक बौद्धिक परीक्षा भी कराई गयी जिसमें प्रवीन आर्य प्रथम, हर्ष द्वितीय, आयुष्मान ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। शिविर की शारीरिक पाठ्य क्रम का संचालक श्री धर्मवीर आर्य कुरुक्षेत्र हरियाणा ने किया, आचार्य नरेन्द्र शास्त्री ने आर्यवीर दल का संक्षिप्त परिचय दिया।

इसके अतिरिक्त शिविर के विनोद ओबराय, राजन खन्ना ने की। युवक-युवतियों के प्रति अपने विचार प्रस्तुत किया, आर्य वीरांगना दल की संचालिका श्रीमती जयावेन ने भी आर्य वीरांगनाओं को सम्बोधित किया। शिविर का समापन १० मई को हुआ।

प्राचीन तीर्थ स्थली गुरुकुल महाविद्यालय पूठ (पुष्पावती) रजत जयन्ती महोत्सव

गंगा के पवित्र तट पर स्थित गढ़मुक्तेश्वर के निकट प्राचीन तीर्थस्थली द्रोणाचार्य की तपस्थली पुष्पावती परगना पूठ में संचालित गुरुकुल महाविद्यालय का रजत जयंती समारोह कुलभूमि में उत्साह पूर्वक मनाया जा रहा है।

इस शुभ अवसर पर उच्चकोटि के सन्यासी विद्वान एवं आर्य भजनोपदेशक तथा आर्य नेता पधार रहे हैं, उनके विचारों से आप लाभान्वित होने के लिए पधारें। १ नवम्बर से स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में यजुर्वेद पारायण यज्ञ होगा। संयोजक आचार्य अरविन्द जी रहेंगे। यजमान महानुभाव सम्पर्क करें और घृत सामग्री देकर पुण्य प्राप्त करें। आकर्षक व्यायाम प्रदर्शन- श्री विनय जी लोहिया मुरादाबाद की अध्यक्षता में व्यायाम प्रदर्शन होगा। संयोजक आचार्य राजीव जी रहेंगे। विशेष आकर्षण- गत् २५ वर्षो से गुरुकुल सहयोगी अधिकारी, विद्वान, कार्यकर्ता, स्नातक, पूर्व छात्र, पूर्व आचार्य एवं यजमानों को सम्मानित किया जायेगा।

नोट-१. यह गुरुकुल गढ़-बुलन्दशहर मार्ग से डहराकुटी होकर गंगा किनारे पूठ में स्थित है। बस सुविधा उपलब्ध है।
२. यजमान भारतीय वेशभूषा में ही स्वीकार्य होंगे।
३. गुरुकुल के लिए आपके हर प्रकार के सहयोग की अपेक्षा है।
४. भण्डारे हेतु आटा, चावल, दाल, घी, चीनी देकर पुण्य के भागी बनें।
५. नकद धनराशि अथवा बैंक ड्राफ्ट/चैक गुरुकुल महाविद्यालय में भेजकर रसीद प्राप्त करें।

पृष्ठ.१ का शेष भाग...

सभी सिद्धान्तों को प्रच्छन्न रूप में स्वीकार किया गया। आजादी के बाद हमारे नेता देश की भौतिक समृद्धि में जुट गये विदेशी शिक्षा व्यवस्था बदलने पर ध्यान नहीं दिया। वही शिक्षा व्यवस्था चलती रही जिसमें चरित्र निर्माण अनुशासन बद्ध जीवन जीने का कोई पाठ नहीं है। गुरुकुलीय शिक्षा शिथिल होने लगी डिग्रियां पाने की होड़ लगने लगी। आज ऊँची ऊँची डिग्रीधारी स्नातक/स्नातिकाओं की बहुतायत है परंतु चरित्रवान अनुशासन बद्ध जीवन जीने वाले युवाओं का अभाव सा है।

आजादी की प्राप्ति के बाद आर्य समाज आन्दोलन में भी शिथिलता आ गई अतः जिन बुराइयों से मुक्त बनाने के उद्देश्य से आर्य समाज आन्दोलन चला था वह बुराइयां फिर बढ़ चढ़कर होने लगी है। नारी की अस्मिता असुरक्षित है, अतिशय धन कमाने की होड़ में सही गलत चिन्तन शिथिल है, जैसे भी हो धन आना चाहिए। फलतः भ्रष्टाचार चरम पर है। ऋषि ने जिसे जातिपांति के भेद को देश की पराधीनता में देखा था वह जाति पांति का भेद आज राजनीति का अंग बन गया है। सभी पार्टियां अपने को सत्तासीन करने की होड़ में जाति भेद को खुला बढ़ावा दे रही है।

महर्षि दयानन्द ने आर्यो को राष्ट्रनिर्माण सुखी समृद्ध देश बनाने का दायित्व सौंपा था हम उसमें शिथिल से हैं। राष्ट्र विनाश की कगार पर खड़ा है। अतः सभी आर्य नर-नारी इस पर गंभीर चिंतन करें और आर्य समाज आंदोलन को तीव्रगति से चलाने का संकल्प लें। आपस के बैर विरोध मनोमालिन्य को ध्वस्त करके संगठित होकर जब हमारा आर्य समाज आन्दोलन चलेगा तो निश्चय ही सभी विकारों का विनाश होगा और हम अपने देश को सुगठित सुसमृद्ध बनाने में समर्थ होकर महर्षि के स्वप्न को साकार करने में समर्थ बनेंगे।

सभा स्थल पर पहुँचते ही आर्य समाज के अधिकारियों ने माल्यार्पण कर प्रधान जी का भव्य स्वागत किया। इसी अधिवेशन में आर्य समाज नामनेर का वार्षिक निर्वाचन चुनाव अधिकारी वैदिक विद्वान अर्जुनदेव स्नातक एवं पर्यवेक्षक श्री ओम प्रकाश शास्त्री के निर्देशन में सर्व सम्मति से सम्पन्न हुआ। जिसमें नये वर्ष के लिए सर्व सम्मति से प्रधान श्री प्रमोद कुमार गुप्त मंत्री श्री रामवीर वर्मा एवं कोषाध्यक्ष श्री महेन्द्र सिंह निर्विरोध चुने गये। सभा प्रधान जी ने नव निर्वाचित पदाधिकारियों को बधाई दी और कहा कि आप सभी संगठित रूप से अति उत्साह से आर्य समाज को शिखर पर लाने का प्रयास करें।

निर्वाचन अधिकारी वैदिक विद्वान श्री अर्जुनदेव स्नातक ने नव निर्वाचित पदाधिकारियों को अति उत्साह से आर्य समाज को आगे बढ़ाने का संदेश देने के साथ सभा प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा को उनके भाषण को उनके हृदय की अतुलनीय गहराइयों से निकले उपदेश बताया व सभी को उसके अनुरूप चलने का आह्वान करते हुए सभा प्रधान जी का आभार व्यक्त किया।

सोलह-संस्कार

संजीवरूप

(तर्ज - तेरी दुनिया से दूर चले होके मजबूर)

होते सोलह संस्कार, लेता इनको जोहार, हो जाता है सुखी।
ऋषियों के ये विचार, लेता मन में उतार, हो जाता है सुखी।।
पहला संस्कार है गर्भाधान समझ लो इसे
होगी मनचाही तुम्हारी सन्तान समझ लो इसे
इसमें है विज्ञान, जाने जो भी इन्सान, हो जाता है सुखी।।
कर तैयारी कृषक जैसे बोता समय पर गेहूँ-धान
वैसे ही समय पर बना स्वस्थ तन मन करें गर्भाधान
पुनः ब्रह्मचर्य धार, रहे जो भी नर-नार।। हो जाता है सुखी।।
सीमान्तोन्नयन-पुंसवन संस्कारों में करना विचार
देखें - सुनें खाएँ हम अच्छा, हो सालिक हमारा व्यवहार
करें नित्य जो हवन, और वेद का मनन।। हो जाता है सुखी।।
जातकर्म चौथा, बड़े काम का है ये देखो संस्कार
सोने की शलाखा से मधु-घृत लेके जिज्हवा से ऊँधार
मेरा गुख नाम वेद जान लेता जो भी भेद - हो जाता है सुखी।।
झूठा है जन्म-पत्र, झूठी है पुराणों की बातें ये सभी
खुद नाम धरना - पुराणों की ये बातें न सुनना कभी
ये ही वेद का है पथ चले रूप जो गृहस्थ। हो जाता है सुखी।।
छठा निष्क्रमण है जो हो जाए चौथे महीने का लाल
घर से निकालो, घुमाओं पर रखो सफाई का ख्याल
मन में ले उत्सर्ग, चन्द्रमा का देता अर्ध, हो जाता है सुखी।।
होते छः महीने का शिशु अन्नप्राशन का करना विचार
श्रेष्ठ चावलों की बना खीर उसको चटाना बार बार
इस तरह से रख ध्यान रहे जो भी इन्सान, हो जाता है सुखी।।
आठवाँ है मुण्डन इसे अपने घर पर कराना सुन लो
तीर्थ स्थानों में गंगा के किनारे न जाना - सुन लो
बाल भूमि में दबा, पुण्य लेता जो कमा - हो जाता है सुखी।।
नौवां कर्ण भेदन है इसमें छिपा हुआ है पूरा विज्ञान
गुप्त रोग होते न हर्निया का पूरा है ये तो समाधान
करता जो ऐसा कार्य, कहलाता वो ही आर्य- हो जाता है सुखी।।
दसवां है यज्ञोपवीत जिसका गाते हैं ऋषि गुणगान
धार इसे होता नया जन्म बनता है इन्सां महान
तीन ऋण का विचार इन्हें लेता जो उतार - हो जाता है सुखी।।
वेदारम्भ ग्यारहवां दीक्षान्त बारहवां है वो संस्कार
पढ़ वेद विद्या को हो के ज्ञानी लेता है संकल्प धार
सत्य का ही व्यवहार, सत्य का ही व्यापार- हो जाता है सुखी।।
है ग्रहस्थ आश्रम बड़ा श्रेष्ठ सब आश्रमों का आधार
इसमें वो जाए जो हो न रोगी, पापी करे न व्यभिचार
होवे आपस में चाह, करे तब ही विवाह - हो जाता है सुखी ।।
पुत्र के हो जाए जो पुत्र, घर तजने का करले विचार
सेवा में समाज की दे समय करे अपना आत्म उद्धार
पन्द्रहवां है सन्यास - जाता उसके जो पास - हो जाता है सुखी।।
मृत्युवाद होता है जिसे हम कहते 'सोलहवां संस्कार'
तन के वजन से ले दुगुना घी- सामिग्री करें संस्कार
तेरहवी का अनुष्ठान नहीं माने जो इंसान - हो जाता है सुखी।।

-गुँधनी बदायूँ।

आर्य समाज चन्द्र नगर लखनऊ में वेद प्रचार कार्यक्रम का आयोजन

आर्य समाज चन्द्र नगर लखनऊ में दिनांक १३ से १६ अगस्त १५ तक वेद प्रचार कार्यक्रम का आयोजन किया गया है जिसमें नित्य प्रातः ७ बजे से ८:१५ तक ऋग्वेद शतकम् से विशेष यज्ञ होगा। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य वेदव्रत अवस्थी एंव पं. संतोष वेदालंकार होंगे। यज्ञ की पूर्णाहुति दिनांक १६ अगस्त को प्रातः ७ से ८:४५ तक होगी। यज्ञ के अनन्तर वेदोपदेश प्रातः १० बजे तक होंगे तथा सायं ७ से ८:४५ तक संध्या उपदेश डा. जयेन्द्र शास्त्री आचार्य आर्ष गुरुकुल नोएडा तथा भजन श्री कुलदीप विद्यार्थी बिजनौर के होंगे। दिनांक १६ अगस्त को कार्यक्रम समाप्ति पर ऋषि लंगर भी आयोजित होगा।

मंत्री
आर्य समाज चन्द्र नगर
लखनऊ

अल्प परिचय स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती

प्रखरबुद्धि-अल्पआयु में प्राथमिक विद्यालय में ही अध्ययनरत, गाय का महत्व निबंध लिखने पर ६६ : अंक प्राप्त किये। कृषि कार्य करते हुए भी पढ़ाई में रूचि, मात्र १३ वर्ष अवस्था में ही हैदराबाद सत्याग्रह के समय आर्यसमाज के गुरूकुल में रहते वैदिक सिद्धान्तों से प्रभावित होते रहे।

आर्यसमाज मल्हारगंज इन्दोर में आर्यकुमार सभा द्वारा परीक्षा उत्तीर्ण, यही पर उपमंत्री बनें और मध्यभारत आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारी भी रहे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट-टंकारा के अखिल भारतीय प्रचारक सम्पूर्ण भारत की रेल बस मोटर साइकिल, साइकिल से ५० वर्ष तक निरन्तर यात्रा दो बार स्वतंत्र राष्ट्र नेपाल की भी विदेश यात्रा की।

गृहस्थ आश्रम में कन्या सुषमा को गुरूकुल बड़ौदा (गुजरात) एक सुपुत्र को उपदेशक विद्यालय हिसार हरियाणा में पढ़ाया प्रकाश को, सुरेश और प्रकाश को अन्तराष्ट्रिय उपदेशक महाविद्यालय-टंकारा में अध्ययन कराया। जिन्होंने कीर्तिमान स्थापित किये।

अन्य छात्र और छात्राओं को भी गुरूकुलों में पढ़ने की प्रेरणा दी जो देश के विभिन्न भागों में वैदिक धर्म का प्रचार कर रहे हैं। आपने कई नये आर्यसमाज स्थापित किये पुरानों को फिर से सक्रिय किया।

आर्यसमाज के प्रभाव के कारण निर्व्यसनी बने और ८७ वर्ष की अवस्था में भी सभी अंगों से शरीर एकदम से स्वस्थ है। सभी कार्य स्वयं कर लेते है।

अजमेर में वानप्रस्थ एवं टंकारा में सन्यास लिया आर्य प्रवक्ता पुस्तक पृष्ठ १/७३ में पूर्व नाम राजपाल आर्य नाम पत्ते सहित प्रकाशित हुआ है। स्वामी जी समय के पाबंद है।

मूलतः आप साहित्यकार, भजन, लेखक, गायक, प्रवचन कर्ता और पत्र पत्रिकाओं में आपके लेख लिखते हैं, यात्रा सम्बन्धी पुस्तकें भी छपी है। गुजरात के माननीय मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्रभाई मोदी के हस्त दिनांक २०.०२.२०१२ को टंकारा में संकल्पानन्द पुरस्कार और शॉल ओढ़ाकर सम्मान प्रदान किया गया अन्य भी अनक साहित्यिक, धार्मिक, सामाजिक संस्थाए सार्वजनिक सेवाओं के लिए सम्मानित करती रहती है।

आप अनवरत रूप से टंकारा, उदयपुर, अजमेर के वार्षिक उत्सवों में वर्षो से उपस्थिति देते आ रहे है। और आर्यसमाज सम्बन्धी शताब्दी समारोही में सभी में जाते रहे है।

आपकी विशेष रूचि सन् १६५४ से वर्तमान तक प्रतिभा सन्मान समारोह का आयोजन और विशेष आयोजन करते रहना है भारत के सभी सुप्रसिद्ध शिक्षण संस्थाओं को देखा है और प्रेरणा ली है। सभी आयोजनों की फिल्म फोटो आज-तक सुरक्षित है। स्वामी जी १६६३ से वर्तमान तक दैनिक डायरी लिखते आ रहे है जो आर्यसमाज के इतिहास की अमूल्य निधि है। आय-व्यय का हिसाब है बचत सार्वजनिक कार्यो में खर्च होती है। स्वामी जी ने अपने जीवन में गुप्त और प्रगट रूप से आर्यसमाज संस्था, टंकारा, उदयपुर, अजमेर अन्यों को दान दिया है, और सार्वजनिक प्रदर्शनी भी बनाई है जो प्रदर्शित होती रहती है।

आपने आर्यसमाज के साथ सार्वजनिक कार्यो के लिए दान के लिए प्रवृति और स्वयं के जीवन निर्वाह के लिए श्री आचार्य रामदेव जी शास्त्री महर्षि दयानंद सरस्वती स्मा. ट्रस्ट-टंकारा ने संसार की आर्य जनता के नाम एक अपील कृपा कर प्रकाशित, भारतीय स्टेट बैंक में ऑनलाईन खाते में सहायतार्थ खाता नंबरः ३१०६०१६६७६४ किसी भी शाखा में किसी भी शहर में जमा करिए जैसे अभी तक करते आ रहे है, इससे स्वामी प्रवासानन्द जी सरस्वती को इस अति वृद्ध अवस्था में भी परोपकार और स्वयं के खर्च के लिए सुविधा बनी रहे। स्वामी जी को अपने परिवार से भी अन्यों की तरह सहायता मिलती रहती है।

जीवन के अस्ताचल में अब जब अन्तिम यात्रा की ओर जाना ही है तब इस शरीर के उन सभी अंगों को जो औरो के काम आ सकते हो दान करना है, इसमें पुलिस, शासकीय विभाग, जनता का सहयोग अपेक्षित है।

रहना नहीं देश पराया है, इस जीवन में सभी प्रकार के सहयोगियों के प्रति बहुत बहुत आभार न जाने आप कहां होंगे न जाने हम कहां होंगे।

अब न कोई बलबले है, और न अरमानों की भीड़, इस भरी महफिल से चले जाने की विवशता हमारे सपने, प्रवासानन्द ही है आखरी तो अलविदा अब आगे कहीं मिलने के लिए।

सत्यार्थ प्रकाश

- आदि सृष्टि के ब्रह्म से ले के महाभारत काल के जैमिनी पर्यन्त के समस्त ऋषियों के सदुपदेशों को अक्षरदेह प्रदान करके ऋषिऋण और पितृऋण से उऋण होने का सच्चे अर्थो में श्राद्धग्रन्थ है।
- भोगवादी आसुरी वृत्ति और पशुत्व के संस्कारों में लिपटे हुए भ्रमित मानव में आर्यत्व एवं देवत्व के नव प्राणों का संचार करने वाला शंखनाद है।
- शरीर, मन, आत्मा, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष तथा व्यक्ति, समाज और राष्ट्र आदि के सर्वतोमुखी अभ्युदय के प्रगति द्वार पर जड़े हुए ताले को खोलने की एक मात्र कुंजी है।
- ईश्वर जीत प्रकृति जैसे सूक्ष्मतम पदार्थो और पुनर्जन्म, कर्मफल, मोक्ष जैसे परोक्ष विषयों को समझने के लिए आदर्श दूरबीन है।
- प्रकृति से सृष्टि पर्यन्त तत्वों को प्रस्तुत करती हुई विज्ञान के पंख पर अन्तरिक्ष में घूमते हुए पृथ्वी का चक्कर लगाने वाली महान वैज्ञानिक प्रयोगशाला है।
- मनुष्य जीवन उत्थान से जुड़ी हुई प्रत्येक बात का सटीक खुलासा करने वाला यह ग्रन्थ मानों अमृत कुम्भ है।

आर्य वीरों! भारत को बचाओ

आज जरूरत है भारत को, आर्य वीर महानों की।
यश गाथाएं गाता है जग, देश भक्त मर्दानों की।।
आर्य वीर उन्हें कहते हैं, काम जगत के आते हैं।
अबला, दीन, अनाथ जनों को, अपने गले लगाते हैं।।
विघ्न और बाधाओं में जो, कभी नहीं घबराते हैं।
मानवता के हत्यारों का, जग से नाम मिटाते हैं।।
अमर कहानी हो जाती है, जग में उन बलवानों की।
यश गाथाएं गाता है जग, देश भक्त मर्दानों की।।
परमपिता उस परमेश्वर को, भूल गए हैं नर-नारी।
भौतिकता की चकाचौंध में, अंधी हैं दुनिया सारी।।
खाओ, पिओ, मौज उड़ाओ, कहते हैं भ्रष्टाचारी।
भेदभाव की, ऊँच नीच की, पनप गई है बीमारी।।
घूम रही है आज टोलियाँ, दंगाबाज शैतानों की।
यश गाथाएं गाता है जग, देश भक्त मर्दानों की।।
युवक युवतियां ऋषि मुनियों की शिक्षाएं अब भूल गए।
फैशन के दीवाने वैदिक, पथ से हो प्रतिकूल गए।।
स्वास्थ्य, चरित्र दिया खो, पगले झूठे मन में फूल गए।
अण्डे, मांस लगे खाने, मदिरा में हो मशगूल गए।।
गीता, रामायण ना पढ़ते, होड़ है फिल्मी गानों की।
यश गाथाएं गाता है जग, देश भक्त मर्दानों की।।
भारत माँ के वीर सपूतों, अपना सीना तान उठो।
क्या थे हम क्या हो गये आज ठीक तरह पहचान उठो।।
बनो वीर प्रताप, शिवाजी, नलवा से बलवान बनो।
बिस्मिल, शेखर, भगत सिंह, बन भारत माँ की शान बनो।।
निर्भय अकल ठीक कर दो तुम, पापी बेईमानों की।
यश गाथाएं गाता है जग, देश भक्त मर्दानों की।।
भारत की माताओं, बहिनों, अपना धर्म निभाओं तुम।
भ्रष्टाचार की लपटों से, मिटता संसार बचाओ तुम।।
दुर्गा, लक्ष्मी, किरणमई बन, रण में तेग बजाओ तुम।
अत्याचारी, बदमाशों का, जग से वंश मिटाओ तुम।।
कदर करेगी सारी दुनिया, 'नन्दलाल'' के गानों की।
यश गाथाएं गाता है जग, देश भक्त मर्दानों की।।

पं. नन्दलाल निर्भय भजनोपदेशक ''पत्रकार''
आर्य सदन बहीन जनपद- पलवल (हरियाणा)
चलभाष- ०६८१३८४५७७४

आर्य महा सम्मेलन अनूप शहर बुलन्दशहर का वृहद् आयोजन

अनूप शहर आर्यवीर दल के स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक १ अगस्त, २०१५ से ३ अगस्त २०१५ तक आर्य महासम्मेलन का आयचोजन महाराजा अग्रसेन भवन दाऊ जी कटरा कलां बाजार अनूप शहर बुलन्दशहर में किया गया। इस सम्मेलन के मुख्य अतिथि डॉ. धीरज सिंह, कोषाध्यक्ष, आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. रहे। उत्सव में आमंत्रित अतिथि आचार्य उमेश चन्द्र कुल श्रेष्ठ आगरा डॉ. ओमदूत आचार्य गुरूकुल तातारपुर हापुड़ आचार्य रघुनाथ सिंह गुरूकुल राजघाट, आचार्य श्री जीवन सिंह प्राचार्य साधु आश्रम अलीगढ़, आचार्या श्रीमती मनोरमा देवी थीं।

कार्यक्रम नित्य प्रातः ८ से १० बजे तक यज्ञ भजन दोपहर १२ से ४ बजे तक राष्ट्र के उत्थान में आर्य समाज की भूमिका पर विद्वानों के विचार सुनने को मिले। रात्रि ८ से १० बजे तक भजन हुये।

SCANNED

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर./फैक्सः०५२२-२२८६३२८
प्रधान-०६४१२६७८५७१, मंत्री-०६८३७४०२१६२, सम्पादक-६५३२७४६६००
ई.मेल-apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,
....
....
....

स्वास्थ्य चर्चा-

यज्ञ से विभिन्न रोगों की चिकित्सा

यज्ञ पर्यावरण की शुद्धि का सर्वश्रेष्ठ साधन है। यह वायुमंडल को शुद्ध रखता है। वर्षा होकर धनधान्य की आपूर्ति होती है। इससे वातावरण शुद्ध व रोगरहित होता है। यह ऐसी औषध है जो सुगंध भी देती है, पुष्टि भी देती है तथा वातावरण को रोगमुक्त भी करती है। इसे करने वाला व्यक्ति सदा रोग मुक्त व प्रसन्नचित्त रहता है। इतना होने पर भी कभी कभी मानव किन्हीं संक्रमित रोगाणुओं के आक्रमण से रोग ग्रसित हो जाता है। इस रोग से छुटकारा पाने के लिए उसे अनेक प्रकार की दवा लेनी होती है। हवन यज्ञ जो बिना किसी कष्ट व पीड़ा के रोग के रोगाणुओं को नष्ट कर मानव को शीघ्र निरोग करने की क्षमता रखते हैं। इस पर अनेक अनुसंधान भी हो चुके हैं तथा पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी हैं। डा. कुन्दन लाल अग्निहोत्री ने इस विषय में सर्वप्रथम पुस्तक लिखी है ''यज्ञ चिकित्सा'' । प्रस्तुत लेख के लेखक ने यज्ञ थेरेपी नाम से एक पुस्तक लिखी है। इस पुस्तक का प्रकाशन गोविंद राम हासानंद ४४०८, नयी सड़क, दिल्ली ने किया है। इन पुस्तकों में अनेक जड़ी बूटियों का वर्णन किया गया है, जिनका उपयोग विभिन्न रोगों में करने से बिना किसी अन्य औषध के प्रयोग से केवल यज्ञ द्वारा ही रोग ठीक हो जाते हैं। इन पुस्तकों के आधार पर हम कुछ रोगों के निदान के लिए उपयोगी सामग्री का उल्लेख करते हुए बताते हैं कि यदि इस सामग्री के उपयोग से पूर्ण आस्था के साथ यज्ञ किया जावे तो निश्चित ही लाभ होगा।

१. कैंसर नाशक हवन- गूलर के फूल, अशोक की छाल, अर्जुन की छाल, लोध, माजूल, दारूहल्दी, हल्दी, खोपारा, तिल, जो, चिकनी सुपारी, शतावर, काकजंघा, मोचरस, खस, मन्जीष्ठ, अनारदाना, सफेद चन्दन, लाल चन्दन, गंधा विरोजा, नारवी, जामुन के पत्ते, धाय के पत्ते, सब को समान मात्रा में लेकर चूर्ण करें तथा इस में दस गुना शक्कर व एक गुना केसर डालकर दिन में तीन बार हवन करें।

२. संधि गत ज्वर- (जोड़ों का दर्द (संभालू) निर्गन्डी के पत्ते, गुग्गल, सफेद सरसों, नीम के पत्ते, रात आदि का संभाग लेकर चूर्ण करें घी मिश्रित धुनी दें, हवन करें।

३. निमोनियां नाशक- खुरासानी अजवाइन, जटामासी, पश्मीना कागज, लाल बुरा, सब को संभाग ले घी सचूर्ण कर नित हवन करें व धुनी दें।

पीनस (बिगड़ा हुआ जुकाम) बरगद के पत्ते, तुलसी के पत्ते, नीम के पत्ते, वायबिडंग, सहजन की छाल सब को संभाग ले चूर्ण करें इस में धूप का बुरादा मिलाकर हवन करें व धूनी दें।

श्वास- कास नाशक बरगद के पत्ते, तुलसी के पत्ते, वच, पोहकर मूल, अड़सा-पत्र, सब का संभाग लेकर चूर्ण करके घी सहित हवन कर धूनी दें।

सरदर्द नाशक काले तिल और वायविडंग चूरन संभाग लेकर घी सहित हवन करने से व धुनी देने से लाभ होगा।

३. चेचक नाशक- खसरा गुग्गल, लोबान, नीम के पत्ते, गंधक, कपूर, काले तिल, वायविडंग सब का संभाग लेकर घी सहित हवन करें व धुनी दें।

जिह्वा तालू रोग नाशक- मुलहठी, देवदारू, गंधा विरोजा, राल, गुग्गल, पीपल, कुलंजन, कपूर और लोभान सब को संभाग ले घी सहित हवन करें व धुनी दें।

टायफायड- यह एक मौसमी व भयानक रोग होता है। इस रोग के कारण इससे यथा समय उपचार न होने से रोगी अत्यंत कमजोर हो जाता है तथा समय पर निदान न होने से मृत्यु भी हो सकती है। उपर्वर्णित ग्रंथों के आधार पर यदि ऐसे रोगी के पास नीम, चिरायता, पितपापदा, त्रिफला, आदि जड़ी बूटियों का समभाग लेकर इन से हवन किया जावे तथा इन का धुँवा रोगी को दिया जावे तो लाभ होगा।

ज्वर- ज्वर भी व्यक्ति को अति परेशान करता है किंतु जो व्यक्ति प्रतिदिन यज्ञ करता है उसे ज्वर नहीं होता। ज्वर आने की अवस्था में अजवाइन से यज्ञ करें तथा इस की धुनी रोगी को दें। लाभ होगा।

नजला, सिरदर्द, जुकाम- यह मानव को अत्यंत परेशान करता है, इससे श्रवण शक्ति, आँख की शक्ति कमजोर हो जाते हैं तथा सर के बाल सफेद होने लगते हैं। लंबे समय तक यह रोग रहने पर इससे टायफाइड या दमा आदि भयानक रोग भी हो सकते हैं। इन के निदान के लिए मुनक्का से हवन करें तथा इस की धुनी देना उपयोगी होता है।

नेत्र ज्योति- नेत्र ज्योति बढ़ाने का भी हवन एक उत्तम साधन है। इसके लिए हवन में शहद की आहुति देना लाभकारी है। शहद का धुआं आँखों की रोशनी को बढ़ाता है, मस्तिष्क को बल, मस्तिष्क की कमजोरी मनुष्य को भ्रांत बना देती है। इसे दूर करने के लिए शहद तथा सफेद चन्दन से यज्ञ करना चाहिए तथा इस का धुनी देना उपयोगी होता है।

वातरोग- वातरोग में जकड़ा व्यक्ति जीवन से निराश हो जाता है। इस रोग से बचने के लिए यज्ञ सामग्री में पिप्पली का उपयोग करना चाहिए। इस के धुएं से रोगी को लाभ मिलता है।

मनोविकार- मनोरोग से रोगी जीवित ही मृतक समान हो जाता है। इस के निदान के लिए गुग्गल तथा अपामार्ग का उपयोग करना चाहिए। इस का धुआं रोगी को लाभ देता है।

मधुमेह- यह रोग भी रोगी को अशक्त करता है। इस रोग से छुटकारा पाने के लिए हवन में गुग्गल, लोबान, जामुन वृक्ष की छाल, करेला का डन्ठल, सब संभाग मिला आहुति दें व इस की धुनी से रोग में लाभ मिलता हैं।

उन्माद मानस रोग - यह रोग भी रोगी को मृतक सा ही बना देता है। सीताफल के बीज और जटामासी चूर्ण समभाग लेकर हवन में डाले तथा इस का धुआं दे तो लाभ होगा।

चित्रभ्रम- यह भी एक भयंकर रोग है। इस के लिए कचूर, खास नागरमौथा, महया, सफेद चन्दन, गुग्गल, अगर, बड़ी इलायची, नारवी और शहद संभाग लेकर यज्ञ करें तथा इसकी धुनी से लाभ होगा।

पीलिया- इसके लिए देवदार, चिरायत, नागरमोथा, कुटकी, वायविडंग संभाग लेकर हवन में डाले, इस का धुआं रोगी को लाभ देता है।

क्षय रोग- यह रोग भी मनुष्य को क्षीण कर देता है तथा उसकी मृत्यु का कारण बनता है। ऐसे रोगी को बचाने के लिए गुग्गल, सफेद चंदन, गिलोय, बांसा सब का १००-१०० ग्राम चूरन कपूर ५ ग्राम, १०० ग्राम घी सब को मिलाकर हवन में डाले। इसके धुएं से रोगी को लाभ होगा।

मलेरिया- मलेरिया में भी भयानक पीड़ा होती है। ऐसे रोगी को बचाने के लिए गुग्गल, लोबान, कपूर, हल्दी, दारूहल्दी, अगर, वायविडंग,बाल्छाद देवदार, बच, कठु, अजवाइन, नीम के पत्ते समभाग लेकर संभाग ही घी डाल हवन करें। इसका धुवां लाभ देगा।

अपराजित या सर्वरोग नाशक धूप- गुग्गल, बच, गंध, तरीन, नीम के पत्ते, अगर, रत्न, देवदार, छिलका सहित मसूर संभाग घी के साथ हवन करें। इसके धुएं से लाभ होगा तथा परिवार रोग से बचा रहेगा।

-संदीप आर्य,
सांन्ताक्रुज (पूर्व) मुम्बई-४०००५५

शिक्षाविद् एवं स्वतंत्रता सेनानी का वियोग

गुरूकुल रूद्रपुर के संस्थापक, संचालक, अधिष्ठाता, स्वतंत्रता सेनानी पं. सत्यदेव जी शास्त्री के वियोगजन्य दुख से सभी आर्य दुखी है। आप पुरानी पीढ़ी के विद्वान एवं साधक थे। आपने विपरीत परिस्थितियों को अनुकूल बनाया, आपने अपनी भूमि पर गुरूकुल की स्थापना की और संचालन किया। आप सदैव गंभीर एवं पुरूषार्थी जीवात्मा संघर्षशील व्यक्तित्व के रूप में उभर कर आये। आचार्य सूर्यदेव जी जैसे विद्वान आपके सुपुत्र बनें, ब्रह्मदत्त जैसे बलिदानी बनें, आर्येन्द्र जी जैसे समाजसेवी कार्य कर रहे हैं। आपकी सुयोग्या पुत्री भी जीवन समर्पित कर कन्या गुरूकुल का संचालन कर रही है। आपका आदर्श आर्य वैदिक युगीत परिवार है। जहां भावी पीढ़ी के निर्माण की परम्परा पोषित हो रही है। आप क्रांतिकारी विचारधारा से प्रभावित रहे। आपने वैदिक परम्परा को सुरक्षित रखने के लिए ही गुरूकुल स्थापित किया था जहां डा. ज्वलंत कुमार शास्त्री जैसे सैकड़ों विद्वान तैयार हुए हैं।

उनका वियोग आर्य जगत के लिए अपार क्षति है। आर्य मित्र परिवार एवं आर्य प्रतिनिधि सभा आपके प्रति अपनी आत्मीयता से श्रद्धा अभिव्यक्त करती है। आचार्य सूर्यदेव जी के बाद आप विधिवत सब कार्य संभाल रहे थे। अब पं. आर्येन्द्र जी का विशेष कर्तव्य है कि इस ज्ञान सम्पदा की सुरक्षा करते हुए गुरूकुल संरक्षण एवं संवर्धन पर विशेष ध्यान देकर पिताश्री की इच्छानुरूप गुरूकुल का संचालन करें। श्री देवेन्द्र पाल वर्मा प्रधान जी भी अपनी शोक श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं।

SCANNED

स्वामी-आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक—आचार्य वेदव्रत अवस्थी, मुद्रक प्रकाशक—श्री सियाराम वर्मा, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, ५—मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शुभम् आफ्सेट प्रिंटर्स, कैसरबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित
लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है—सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।

SCANNED